देवमार्कण्डेय की देव प्रतिमाएँ

–डॉ. डी. पी. तिवारी* एवं अनुष्का ओझा**

*पूर्व कुलपति,
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार
** शोध छात्रा, वीरकुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार

देवमार्कण्डेय नामक पुरास्थल बिहार के रोहतास जनपद की विक्रमगंज तहसील से पूरब दिशा में 30 किलोमीटर की दूरी पर 25^{0} 7′ 39′′ उत्तरी अक्षांश तथा 84^{0} 19′ 26′′ पूरबी देशांतर पर स्थित है। इस स्थल पर इटिम्हा बाजार या नासिरी गंज से होकर पूर्व की सड़क से लगभग 8 किलोमीटर की दूरी तय करके पहुँचा जा सकता है। इसके नामकरण के विषय में एक धारणा है कि ऋषि मार्कण्डेय यहां रहते थे और उन्होंनें कलियुग में इस स्थल पर एक मंदिर का निर्माण किया था इसलिए इसे उनके नाम पर देवमार्कण्डेय के रूप में जाना जाता है[1]। एलेक्जेंडर कनिंघम ने यहां स्थित सूर्य मंदिर के आधार पर यह माना था कि सूर्य का अपर नाम मार्कण्ड होता है इसलिए यहां पर सूर्य मंदिर होने के कारण इस स्थल का नाम देवमार्कण्डेय हुआ[2]। फ्रांसिस बुकनन ने इस स्थल का निरीक्षण 1 दिसम्बर 1812 को किया था तब उन्हें इस स्थल पर ईंटों की बनी संरचनाओं के ढेर टीले के रूप में मिले थे जिस पर 4 शिवलिंग थे जिनमें से एक चतुर्मुखी था। उन्होंने नट मंदिर और प्राचीन सूर्य मंदिर के खण्डहरों का भी उल्लेख किया है जहां उन्हें गणेश और सूर्य की प्राचीन मूर्तियां दिखी थीं। इसी मंदिर से 100 गज आगे एक अन्य मंदिर में उन्होंने गौरीशंकर की प्रस्तर मूर्ति का उल्लेख किया था[3]। सम्मुख पाण्डे ने यहां के मंदिरों को गुप्तकालीन माना है[4]। डी0 आर0 पाटिल ने इस स्थान का अच्छा विवरण दिया है[5]। दिनांक 6.2.2021 को इस स्थल का सर्वेक्षण किया गया और यह पाया गया कि यह गांव एक 8 मीटर ऊंचे पुराने टीले पर बसा हुआ है और पुरानी बस्ती का कोई हिस्सा अब खाली एवं खुला हुआ नहीं बचा है। गांव के अन्दर कुछ कच्ची मिट्टी से बनाए गए मकानों की दीवालों में प्राचीन मृद्भाण्डों के टुकड़े लगे हुए आज भी मिलते हैं जिससे यहां पर एक प्राचीन बस्ती होने की पुष्टि होती है। स्थलीय सर्वेक्षण में कुछ कृष्ण लोहित, उत्तरी कृष्णमार्जित, भूरे एवं लाल रंग के पात्रों के अवशेष भी प्राप्त हुए (चित्र–1, 2)। इनमें कटोरे, थालियां, घड़े, मटके, एवं हांडियां प्रमुख हैं जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि इस स्थल पर ताम्र पाषाणकाल से लेकर आज तक की एक सतत बस्ती है।

चित्र–1, 2:लाल एवंकालेरंग के मृद्भाण्ड

चित्र–3, स्वयंभूगौरी शंकरमंदिर

आज यहां पर मंदिर से संबन्धित भवन एवं संरचनाएं 4 परिसरो मे विभक्त किन्तु एक साथ मिलती हैं। नासिरी गंज से इटिम्हा जाने वाली सड़क के बांए प्रथम परिसर में जिसका प्रवेश उत्तर दिशा में है, इसके अन्दर बीचो–बीच स्वयंभू गौरी शंकर मंदिर है (चित्र–3)। इस मंदिर की संरचना आधुनिक है। इसके बीच में गर्भगृह तथा तीन तरफ से बरामदे बने हैं।गर्भगृह के प्रवेशद्वार के सामने बरामदे में संगमरमर के नन्दी तथा गर्भगृह में स्टील की रेलिंग के अन्दर शिवलिंग स्थापित है। रेलिंग के चारो ओर शिवलिंग की परिक्रमा करने के लिए स्थान है। इस अर्घा–विहीन शिवलिंग के ऊपर चांदी का टोप लगा है तथा उसके नीचे चारो ओर शिव परिवार उत्कीर्ण है जिसमें कुछ आकृतियॉ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं किन्तु कुछ सिंदूर से लिपे होने एवं पत्थर में क्षरण होने के कारण स्पष्ट नहीं हैं (चित्र–5–8)।

चित्रः 4, नन्दी

चित्रः 5–8,शिवलिंग के चारोपार्श्वचित्र

इस मंदिर के दांए पार्श्व में एक विशाल वट वृक्ष है जिसके नीचे पत्थर के सिल और लोढ़े रखे हुए हैं जो कभी इसी टीले से प्राप्त हुए होंगे। एक पत्थर की सिल के ऊपर ब्राह्मी के अक्षरों का अंकन है जिसमें बीच में स्वास्तिक चिन्ह बना है तथा दोनो किनारों पर ब्राह्मी अक्षर म के अन्दर म तथा त और र संयुक्ताक्षर में लिखा है जिसे मंत्र के रूप में पढ़ा जा सकता है (चित्र–9)। तत्पश्चात् एक पंक्ति में पांच छोटे–छोटे नवीन मंदिर बने हैं जिनमें प्रथम में दुर्गा, दूसरे में सरस्वती, तीसरे में हनुमान, चौथे में सर्प फण और पांचवें में साईं की आधुनिक मूर्ति संगमरमर पत्थर पर बनी रखी हुई है।

चत्रः 9, पत्थर की सिल चित्रः 10,दुर्गा चित्रः11, हनुमान चित्रः 12,सर्पफण चित्रः13,साईं

इस परिसर के बांए अर्थात पूरबी द्वार से निकल कर बाहर जाने पर दूसरे परिसर में एक वृक्ष के नीचे बलुए पत्थर से बना एक शिवलिंग रखा हुआ है (चित्र–14) तथा इस परिसर में एक प्रेक्षा मंच तथा यज्ञशाला बनी है। पुनः पूरब की दिशा में आगे बढ़ने पर तीसरे परिसर में पांच आधुनिक मंदिर संरचनाएं एवं कुछ छोटी–छोटी मंडपिकाएं एवं खुले में ईंटों से छोटे–छोटे चबूतरे बने हुए हैं (चित्र–15)। इन मंडपिकाओं और चबूतरों पर छोटे–छोटे शिवलिंग के आकार की आकृतियां बनीं हैं जिन्हे स्थानीय लोग सती माता के नाम से पूजते हैं (चित्र–16)।

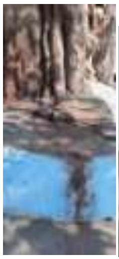
चित्रः 14, शिवलिंग

चित्रः 15, मंडपिकाएं एवंचबूतरे

चित्रः 16 सतीचौरा

इस परिसर में कुल चार मंदिर हैं। प्रथम मंदिर (चित्र–17) प्रवेश द्वार के निकट सतीचौरा के पूरब में है जो पूर्वाभिमुख है। यह मंदिर एक वर्गाकार चबूतरे पर बना है जिसके गर्भगृह में एक बलुए पत्थर का शिवलिंग, बालू और सीमेंट से बनाए गए अर्घा के अन्दर स्थापित है।शिवलिंग की ऊँचाई 40 से0मी0 तथा मोटाई 61 से0मी0 है (चित्र–18)। इसके पार्श्व में 8 से0 मी0 चौड़ा तथा 15 से0मी0 लम्बा संगमरमर पत्थर पर बना एक नन्दी है। शिवलिंग पर एक तरफ ध्यान मुद्रा में भगवान शिव की शिरोभाग उत्कीर्ण है (चित्र–19)। उनके शिर पर मुकुट, गले में सर्प की माला है। गोल कपोल, चौड़े मस्तक, छोटी नासिका, पतले ओष्ठों के आधार पर कहा जा सकता है कि इसका निर्माण गुप्तकाल में किया गया होगा जबकि अर्घा और नन्दी मंदिर के निर्माण के समय के अर्थात् आधुनिक हैं। इस टीले पर एक वट वृक्ष के नीचे कुछ टूटी हुई प्रस्तर मूर्तियां पड़ी हैं जिनमेंः

चित्रः 17,मंदिर

चित्रः 18,शिवलिंग

चित्रः 19,ध्यानमुद्रा में शिव

1. विष्णु की बलुए पत्थर पर स्थानक मुद्रा में बनी मूर्ति है जिसका शिर टूटा है। यह खंडित प्रतिमा 38 सेंटीमीटर लम्बी तथा 18 सेंटीमीटर चौड़ी है। इसके गले में ग्रैवेयक, कटि में मेखला तथा बांए कन्धे से लटकता हुआ यज्ञोपवीत प्रदर्शित है (चित्रः 20)।
2. बलुए पत्थर पर बनी विष्णु की स्थानक मुद्रा की मूर्ति का जंधा भाग है। यह खंडित प्रतिमा 20 सेंटीमीटर लम्बी तथा 06 सेंटीमीटर चौड़ी है। इसके कमर में कटि मेखला तथा जंघो पर लटकती हुई बनमाला दिखाई देती है। घुटनों के नीचे दोनों पैर तथा कमर के ऊपर का भाग टूटा है (चित्रः 21)।
3. यह खण्डित प्रतिमा भी विष्णु की है जो बलुए पत्थर पर स्थानक मुद्रा में बनी है जिसका शिर, दांया हाथ और दोनों पैर टूटे हैं। यह 25 सेंटीमीटर लम्बी तथा 20 सेंटीमीटर चौड़ी है। इसका बायां हाथ वरद मुद्रा में है तथा बांए कन्धे से लटकता हुआ यज्ञोपवीत एवं बनमाला प्रदर्शित है। इसके कटि में मेखला तथा अधोवस्त्र की चुन्नटें दो–दो रेखाओं द्वारा प्रदर्शित हैं (चित्रः 22)।

चित्रः 20

चित्रः 21

चित्रः 22

चित्रः 23

चित्रः 24

चित्रः 25

4. बलुए पत्थर पर बनी किसी स्त्री प्रतिमा का पैर का भाग जो 36 सेंटीमीटर चौड़ी पीठिका पर स्थानक मुद्रा में खड़ी है। इसके दोनों पैरों में पाजेब सुशोभित हैं (चित्रः 23)।
5. यह बलुए प्रस्तर पर बनी स्थानक मुद्रा में खड़ी कुबेर की मूर्ति का अधोभाग है। यह 26 सेंटीमीटर ऊंची तथा 16 सेंटीमीटर चौड़ी है (चित्रः 24)।
6. बलुए प्रस्तर से बने, मंदिर में प्रयुक्त लिंटेल के ऊपर का भाग जिसके बीच में एक उपासक की मूर्ति है। यह 48 सेंटीमीटर ऊँचा है (चित्रः 25)। ये सभी खण्डित मूर्तियॉ 12वीं से 14वीं शताब्दी की प्रतीत होती हैं।

इस वृक्ष के दाहिने एक छाटे से मंदिर (चित्रः 26) के अन्दर दीवाल में बने ताखो ंमें तीन मूर्तियां रखी गई हैं (चित्रः 27)। इनमें से प्रथम मूर्ति पार्वती की है जिनके शिर पर बालों का जूड़ा है। इनके कान कंधों तक लटकते प्रदर्शित हैं। इनके गले में माला, अल्प विकसित कुच, बांया हाथ जंघे पर तथा दायां योग मुद्रा में दिखाया गया है। मूर्ति एक चौकी पर बैठी हुई प्रदर्शित है जिसका बांया पैर मुड़ा हुआ है तथा दांया नीचे लटकता हुआ भूमि को स्पर्श कर रहा है। मूर्ति के पृष्ठ फलक पर दाहिने लकुलीश और बांए त्रिशूल बना है। इसके पैरों के पास नीचे की ओर नन्दी विराजमान हैं(चित्रः 28)।

चित्र : 26,मंदिर

चित्रः 27,ताखों में मूर्तियां

चित्रः 28,पार्वती

चित्रः 29, लकुलीश

दूसरी मूर्ति भगवान लकुलीश की है जिनके बांये हाथ में दण्ड है और दांया हाथ घुटने पर अवलंबित है। किसी–किसी मूर्ति में लकुलीश को कुल्हाड़ी के साथ भी प्रदर्शित किया गया है। ऊर्ध्वरेता मूर्ति का बांया पैर मुड़ा हुआ तथा दांया भूमि पर आश्रित है। इनके शिर पर मुकुट है तथा लम्बे कर्ण कंधों पर लटकते हुए दिखाए गए हैं। मूर्ति के पीछे का प्रभा मंडल सादा है। इस मूर्ति को एक चौकी पर बैठा हुआ बनाया गया है। यह प्रतिमा बलुए प्रस्तर पर निर्मित है तथा यह प्रतिमा 41 सेन्टीमीटर ऊँची तथा 28 सेन्टीमीटर चौड़ी है। ये मूर्तियां मध्यकाल में बनाई गई प्रतीत होती हैं (चित्रः 29)

चित्रः 31, मंदिर भवन

चित्रः 32, शिवलिंग

चित्रः 33, विष्णु

चित्रः 34,सूर्य

लकुलीश को पाशुपत संप्रदाय का प्रवर्तक एवं गुरू माना जाता है। लिंग पुराण के अनुसार लकुलीश भगवान शिव के 28वें अंतिम अवतार एवं योग विद्या के प्रवर्तक थे। उनके चार शिष्य थे जिनका नाम कुरुश्य, गर्ग, मित्र एवं कुशिक था। कूर्म पुराण अध्याय 53, वायु पुराण अध्याय 23, लिंग पुराण अध्याय 24, में उल्लेख है कि महादेव शिव भिक्षु रूप में नकुलिन या नकुलीश के रूप में अवतार लेंगे जिनके चार शिष्य कुशिक, गर्ग, मित्र एवं कर्णुश्य होंगे जो पशुपति संप्रदाय की पुनरस्थापना करेंगे और वह संप्रदाय पाशुपत संप्रदाय के नाम से विख्यात होगा। वायु पुराण 5/1/23/202–214 में लकुलीश को कृष्ण एवं व्यास का समकालीन बताया गया है।

इस छोटे मंदिर से सटा दाहिनी ओर बरामदा युक्त एक मंदिर की नवीन संरचना है जिसकी बाहरी दीवाल पर गणेश की मूर्ति है (चित्रः 31)। बरामदे के पीछे दो कक्ष बने हैं जिसमें बांए तरफ के कक्ष में अंधेरे में एक शिवलिंग स्थापित है। इसका अर्घा आधुनिक समय में सीमेंट से बनाया गया है। शिवलिंग के मध्य में देवनागरी में ऊँ लिखा है जिसके नीचे अर्धचन्द्रकार तीन रेखाएं उत्कीर्ण हैं। यह शिवलिंग 32 सेन्टीमीटर ऊँचा है (चित्रः 32)।

इसी मंदिर के दाहिने वाले कक्ष में दस प्रस्तर मूर्तियां दीवाल में बने ताखों में लाल रंग के कपड़ों से ढक कर रख गई हैं जिनकी पुजारी निष्ठापूर्वक पूजा करते हैं। बांई ओर से क्रम से इनका विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा रहा है। इनमें से प्रथम मूर्ति भगवान विष्णु की है। यह 43X28 सेन्टीमीटर परिमाप की है। यह मूर्ति स्थानक मुद्रा में है। इसके शिर पर मुकुट, कानों में कर्णफूल, दाहिने अतिरिक्त हाथ में चक्र, बांए अतिरिक्त हाथ में गदा, शेष दो हाथ नीचे लटकते हुए हैं जिसमें बांए हाथ में शंख तथा दांया कमल नाल? से युक्त है। मूर्ति का कटि भाग कटि मेखला एवं अधोवस्त्र से आच्छादित है जिसपर लटकती बनमाला दिखाई गई है। श्री मूर्ति के बाएं कन्धे से लटकता यज्ञोपवीत स्पष्ट है। विष्णु मूर्ति के हाथों में कंगन और खुले हुए पैरों में नूपुर प्रदर्शित हैं। विष्णु मूर्ति के नीचे दोनों पाश्वों में प्रतीहारी हैं जिनमें एक स्त्री और एक पुरुष है। श्री मूर्ति के चरणों के पास हाथ जोड़े एक उपासक बैठी मुद्रा में बनाया गया है। इस फलक में ऊपर दोनों तरफ मालाधारी विद्याधरों का अंकन है (चित्रः 33)। ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्रतिमा स्थानीय किसी पहाड़ी से प्रस्तर प्राप्त कर मध्य काल, 14वीं–15वीं शताव्दी में किसी स्थानीय शिल्पकार द्वारा बनाई गई है।

दूसरे ताखे में रखी प्रतिमा सूर्य की है जो बलुए प्रस्तर पर बनाई गई है। यह 66X41 सेन्टीमीटर परिमाप की है। मूर्ति के पीछे प्रभा मंडल, शिर पर किरीट मुकुट, गले में हार, कानों में कर्णफूल, दोनों ऊपर उठे हुए हाथों में पुष्प, कमर में अधोवस्त्र, पैरों में जूता पहने हैं। मूर्ति के नीचे के दोनों हाथ टूटे हैं। मूर्ति के दोनों पार्श्वों में नीचे की ओर एक–एक उपासक बैठे दिखाए गए हैं (चित्रः 34)।

चित्र–35,विष्णु,

चित्रः 36, सूर्य

चित्रः 37, विष्णु

चित्र–38, विष्णु

चित्र–39 विष्णु

मंदिर के इसी कक्ष में तीसरे ताखे में भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापित है। यह 66X46 सेन्टीमीटर परिमाप की है। यह मूर्ति स्थानक मुद्रा में है। इसके शिर पर मुकुट, कानों में कर्णफूल, दाहिने अतिरिक्त हाथ में चक्र, बांए अतिरिक्त हाथ में गदा, नीचे लटकते बांए हाथ में शंख तथा दांया खाली है। मूर्ति का कटि भाग कटि मेखला एवं अधोवस्त्र से आच्छादित है जिसपर लटकती बनमाला दिखाई गई है। श्री मूर्ति के बाएं कन्धे से लटकता यज्ञोपवीत स्पष्ट है। विष्णु मूर्ति के हाथों में कंगन और खुले हुए पैरों में नूपुर प्रदर्शित हैं। विष्णु मूर्ति के नीचे बाएं पार्श्व में चामरधारी स्त्री तथा दांए पुरुष प्रतीहारी है। इस फलक में ऊपर बांई ओर मालाधारी विद्याधर एवं दांई ओर वीणा वादक का अंकन है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्रतिमा स्थानीय किसी पहाड़ी से प्रस्तर प्राप्त कर मध्य काल, 14वीं–15वीं शताव्दी में किसी स्थानीय शिल्पकार द्वारा बनाई गई है (चित्रः 35)। इसी कक्ष में चौथे ताखे में रखी हुई यह प्रतिमा बलुए प्रस्तर पर निर्मित भगवान सूर्य की है जिसका परिमाप 66X46 सेन्टीमीटर है। इसके पैरों में जूते पहनाए गए हैं (चित्रः 36)।पांचवे ताखे में पुनः विष्णु की एक पाषाण प्रतिमा रखी है जो 69X38 सेन्टीमीटर परिमाप की है। यह बलुए पत्थर की बनी है मूर्ति के ऊपर दो वृत्ताकार परिधि में प्रभा मंडल प्रदर्शित है। विष्णु के सिर पर किरीट मुकुट, कानों में कर्ण फूल, गले में ग्रैवेयक, हाथों में बाजूबंद, बांए कंधे पर यज्ञोपवीत, कटि में कटि मेखला एवं अधोवस्त्र, घुटनों तक लटकती वरमाला, पैरों में नूपुर है। भगवान विष्णु के चार हाथों में से बांए ऊपर उठे हाथ में चक्र, दांए ऊर्ध्व हस्त में गदा, नीचे लटकते बांए हाथ में शंख तथा दांए हाथ में पद्म है। श्री

मूर्ति के बांए नीचे की ओर चामर धारिणी स्त्री एवं बांए पुरुष प्रतिहारी है। यह प्रतिमा भी मुगलकाल की प्रतीत होती है (चित्रः 37)

इसी कक्ष के छठे ताखे में पुनः विष्णु की एक पाषाण प्रतिमा रखी है जो 69X38 सेन्टीमीटर आकार की है। इसका प्रभामंडल टूट गया है। श्री मूर्ति के शिर पर किरीट मुकुट, कानों में कुण्डल, गले में ग्रैवेयर हार, बांए कंधे पर यज्ञोपवीत, कमर में कटि मेखला, घुटनों तक लटकती वनमाला, हाथों में बाजूबंद, एवं कंगन, पैरों में नूपुर सुशोभित है। देव के ऊपर उठे बांए हाथ में चक्र, दांए ऊपर उठे हाथ में गदा है। उनके नीचे लटकते बांए हाथ में शंख और दांए हाथ में कमल नाल है। देव मूर्ति के चरणों के पास बांए पार्श्व में दो तथा दांए एक प्रतिहारी बनाए गए हैं। यह प्रतिमा मध्यकालीन प्रतीत होती है (चित्रः 38)।

इस कक्ष के सातवे ताखे में पुनः एक विष्णु की प्रतिमा स्थापित है जो बलुए पत्थर पर बनी है। इसका परिमाप 69X38 सेन्टीमीटर है। इसका प्रभामण्डल पूरी तरह से टूटा है। देव का शरीर टूट कर दो भागों में विभक्त हो गया है किन्तु उसे सावधानी से एक ऊपर दूसरे को रख कर स्थापित किया गया है। उनकी बांए हाथ का चक्र टूट कर गायब हो गया है तथा दांए हाथ की गदा भी आंशिक रूप से खंडित है। श्री मूर्ति के सिर पर किरीट मुकुट, गले में ग्रैवेयक हार, हाथों में बाजूबंद एवं कंगन, बांए कंधे पर यज्ञोपवीत, घुटनों तक लटकती वनमाला सुशोभित है। उनके नीचे लटकते बांए हाथ में शंख तथा दॉए हाथ में कमल (जो बहुत स्पष्ट नहीं है) है। श्री मूर्ति के चरणों के समीप दानों पार्श्वो में प्रतिहारी खड़े हैं। यह प्रतिमा मध्यकालीन है (चित्रः 39)।

मंदिर के इसी कक्ष में पीतल की बनी एक विष्णु की एक मूर्ति रखी है जिसके सिर पर सर्प फण का छत्र है। यह प्रतिमा 11 सेन्टीमीटर ऊंची एवं 5 सेन्टीमीटर चौड़ी है, यह आधुनिक है (चित्रः 40)।

चित्रः 40, विष्णु की कांस्य मूर्ति चित्रः 41 चित्रः 42 चित्रः 43

इस मंदिर के पीछे दाहिने कोने पर खुले स्थान में एक चबूतरे पर सीमेन्ट से बने हुए अर्घा के भीतर एक, एक मुखी शिवलिंग स्थापित है जो बलुए प्रस्तर पर निर्मित है। इसकी

ऊॅंचाई 79 सेन्टीमीटर है। शिवलिंग पर उकेरी गई आकृति का शिरो भाग मुकुट से सुशोभित है। इसके कानों में कर्ण कुण्डल सुशोभित है। इसका आधार आठ फलक वाला है(चित्रः 41)।

इसी परिसर में दो अन्य लघु आकार के मंदिर हैं जिनमें दांए मंदिर को लिंगेश्वर महादेव मंदिर के नाम से जाना जाता है। इसके अन्दर अनेक देवी देवताओं की प्रस्तर मूर्तियॉ स्थापित है। यह मंदिर मूलतः एक चबूतरे पर बनाया गया है जिसके छोटे से गर्भगृह के आगे एक छोटा सा सभा मंडप है जिसकी छत सपाट है। यह मंदिर नागर शैली में बना है (चित्रः 42)। इसके पिरामिडाकार शिखर के ऊपर आमलक, कलश और ऊँ अक्षर युक्त चक्र स्थापित है। इस मंदिर के गर्भगृह के प्रवेश द्वार पर नीचे एक तरफ दण्डधारी एवं चावरधारी द्वारपाल बनाये गए हैं जब कि दूसरी ओर स्त्री प्रतिहारी पैनल लगा हुआ है(चित्रः 43–44)। मंदिर के गर्भगृह में कतिपय देवताओं की मूर्तियां स्थापित हैं।

चित्रः 44

चित्रः 45, सूर्य

चित्रः 46, ब्रह्मा

चित्रः 47, सूर्य

इसमें एक प्रतिमा सूर्य की है जो काले पत्थर से बनी है। इसके ऊपर सुनहले रंग का चमकीला लेप लगाया गया है। मूर्ति के चारों ओर प्रभामंडल है जिसे एक चमकीली पन्नी से ढक दिया गया है। इस मूर्ति के सिर पर एक अलंकृत मुकुट है। इसके कानों में कर्ण–कुण्डलतथा गले में कण्ठ माला है। दोनों हाथों में सूरजमुखी का फूल प्रदर्शित हो रहा है। मूर्ति चोंगे के आकार का अधोवस्त्र धारण किए हुए है जिस पर एक चौड़ी पट्टी दिखाई देती है। मूर्ति के पैनल में दाहिने और बाएॅ दो स्त्रियां बनाई गई हैं जो ऊषा और प्रत्यूषा की द्योतक मानी जा सकती हैं। यह मूर्ति केवल जंघों तक ही बनाई गई है। मूर्ति के नीचे सारथी अरुण बनाए गए हैं। उसके नीचे सात घोड़े प्रदर्शित हैं जो उनके रथ का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। इनमें से तीन घोड़ों के मुख बांए तरफ हैं, तीन के दाहिने तरफ तथा एक का मुख सामने की ओर प्रदर्शित है (चित्र–45)।यह मूर्ति पालकालीनहो सकती है।

हिन्दू धर्म में सूर्य का अत्यन्त महत्व है तथा ऋग्वेद काल में यह प्रमुख देवता के रूप में माने जाते थे एवं उनका महत्व पंचायतन पूजा में अत्यधिक था। इनके अनेक नाम बताए जाते हैं जैसे आदित्य, अर्क,भानु, सवित्र, पूषन, रवि, मार्तण्ड, मित्र, भाष्कर, प्रभाकर, अहिरावन, और विवश्वान इत्यादि[6]। प्रायः सूर्य की प्रतिमा को सारथी अरुण के साथ घोड़ों पर प्रदर्शित किया जाता है जो सात दिनों में सात रंगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सूर्य की प्रतिमा निर्माण संबन्धी निर्देश मत्स्य पुराण, भविष्य पुराण, साम्ब पुराण, विष्णुधर्मोत्तर पुराणमें दिए गए हैं[7]। प्राचीन अभिलेखों और चित्रों में सूर्य को गणेश और इन्द्र के साथ दिखाया जाता था। वृहत्संहिता में सूर्य

के प्रतिमा लक्षण का सैद्धांतिक विवेचन है जिसके अनुसार सूर्य की सिर पर मुकुट तथा दो हाथों के साथ प्रदर्शित किया जाना चाहिए, उनके वस्त्र उत्तर भारतीय शैली के होने चाहिए[8]जबकि विष्णु धर्मोत्तर पुराण के अनुसार सूर्य के चार हाथ होने चाहिए जिनके दोनों हाथों में फूल, एक में छड़ी और चौथेमें पत्र एवं लेखनी होनी चाहिए। उनके रथ सात घोड़ों से युक्त एवं अरुण सारथी द्वारा हांके जाते हुए प्रदर्शित होने चाहिए। उनके बगल में दो देवियॉ ऊषा और प्रत्यूषा धनुष से बाण छोड़ते हुए प्रदर्शित होनी चाहिए जो सूर्य की दो पत्नियॉ संजना और छाया का प्रतिनिधित्व करती हैं। कुछ विद्वानों ने सूर्य की चार पत्नियों का भी उल्लेख किया है[9] ।यूनानी और हखामनी शासकों के प्रभाव से जो सूर्य मूर्तियॉ बनाई गई उसमें उन्हें लम्बा लबादा पहने हुए ऊँचे जूते के साथ प्रदर्शित किया गया है[10] (चित्रः 45)।

यहां दूसरी मूर्ति ब्रह्मा की है जो काले पत्थर से बनी हुई है। मूर्ति के चारों तरफ प्रभामंडल बना हुआ है। मूर्ति में ब्रह्मा के तीन सिर प्रदर्शित हैं जिनमें एक का मुख दाहिनी ओर दूसरे का बांए ओर तथा तीसरा मुख सामने की ओर प्रदर्शित है। तीनों सिरों पर मुकुट अलंकृत है। तीनों सिर के ऊपर केश का जूड़ा बनाया गया है।इनके कानों में कर्ण कुण्डल तथा गले में हार है। कमर में कटिमेखला है तथा बांए कंधे पर यज्ञोपवीत है। मूर्ति के चार हाथ प्रदर्शित हैं जिसमें दाहिए और बांए दो हाथ ऊपर की तरफ उठे हैं एवं नीचे के दो हाथों में एक दाहिने जंघे को स्पर्श करते हुए प्रदर्शित है तथा बांए हाथ में एक छोटी डिब्बी पकड़े हुए दिखाई देते हैं। मूर्ति बैठी हुई मुद्रा में बनायी गई है(चित्रः 46)।

यहां रक्खी तीसरी प्रतिमा सूर्य की है जो काले पत्थर से बनी है। इस पर सुनहरे रंग का चमकीला लेप लगाया गया है। मूर्ति के पीछे आभा मडंल प्रदर्शित है जो सुनहरे रंग का ही है। मूर्ति के सिर पर एक मुकुट अंलकृत है, कानों में कर्ण फूल तथा गले में हार बनाया गया है। मूर्ति में प्रदर्शित दोनों हाथों में सूरजमुखी का फूल लिए हुए है। देव के शरीर पर वस्त्र दिखाई देता है तथा पैरों में जूते हैं नीचे की तरफ मूर्ति के पैनल में दो प्रतीहारी दिखाई देते हैं जो दांए और बांए खड़े हैं जिनमें से एक के हाथ में दण्ड है(चित्रः 47)।

चित्रः 48, गणेश चित्र–49, गणेश चित्रः 50, महिषासुरमर्दिनी चित्रः 51, कपालीशिव

यहां चौथी प्रतिमा गणेश जी की है इसका निर्माण भी काले पत्थर से हुआ है। ऊपर की तरफ मूर्ति के सिर को एक कंठमाला से सजाया गया है। मूर्ति में चार हाथ दिखाई पड़ते हैं

जिनमें दाहिनी तरफ के ऊपर की तरफ उठे हाथ में आयुध है। शेष तीनों हाथों में क्या है यह पहचान पाना मुश्किल है। गणेश जी की यह प्रतिमा बैठी हुई मुद्रा में प्रदर्शित है (चित्रः 48)।

पांचवी पाषाण प्रतिमा भी गणेशजी की है जिनके सिर पर एक पिरामिड आकार का मुकुट है तथा गले में हार, हाथों में कंगन और बाजूबंद प्रदर्शित हैं। मूर्ति में चार हाथ बने हुए हैं और चारो हाथों में आयुध धारण किये हुए दिखाई दे रहे हैं। दाहिनी तरफ ऊपर उठे हुए हाथ में शंख है तथा बांए हाथ में फरशा है। नीचे लटके हुए दाहिने हाथ में चक्र है तथा बांए हाथ में फूल है। मूर्ति में गणेशजी को नीचे की तरफ एक पैर मोड़ कर और दूसरा पैर लटका कर बैठे हुए दिखाया गया है। श्रीमूर्ति के पैरों में नूपूर हैं और पैर के नीचे उनके वाहन मूसक को दर्शाया गया है (चित्रः 49)।

इस मंदिर की छठी पाषाण प्रतिमा देवी दुर्गा की है जो बलुए पत्थर पर बनी है। मूर्ति के पीछे प्रभामंडल बना है। देवी के केश खुले हैं तथा उनका मुख रौद्र रूप में प्रदर्शित है। देवी के कानों में कर्णफूल, गले में हार, हाथों में कंगन और बाजूबंद हैं। मूर्ति में देवी के चार हाथ प्रदर्शित हैं जिनमें से दाहिनी तरफ ऊपर उठे हुए हाथ में तलवार, बांए तरफ उठे हुए हाथ में गदा तथा नीचे की तरफ दाहिने हाथ में त्रिशूल है जिससे महिषासुर का वध करते हुए प्रदर्शित किया गया है। नीचे की तरफ देवी का बायां हाथ महिषासुर के मुख को दबाए हुए है। देवी का एक पैर भूमि का स्पर्श कर रहा है वहीं दूसरे पैर से उन्होंने महिषासुर को दबाया हुआ है, जो मूर्ति के नीचे बना हुआ दिखाई देता है (चित्रः 50)।

यहां सुरक्षित सातवीं पाषाण मूर्ति कपाली शिव की है जिसका रंग काला है। मूर्ति के पीछे प्रभामंड़ल है, सिर पर एक मुकुट अंलकृत है। कानों में बड़े–बड़े कर्ण कुण्डल, गले में हार तथा एक लम्बी नरमुंड माला है। इनके हाथों में कंगन एवं बाजूबंद हैं। मूर्ति में इनके चार हाथ दिखाई दे रहे हैं। दो हाथ ऊपर की तरफ हैं जिनमें एक हाथ में दंड और दूसरे में फरसा दिखाई देता है। नीचे की ओर दोनों हाथों में से एक भूमि को स्पर्श कर रहा है और दूसरे हाथ में कपाल लिए हुए बनाया गया है। मूर्ति में दाहिना पैर मोड़े हुए एवं बांया भूमि को स्पर्श करते हुए लटकाकर बैठे हुए प्रदर्शित है (चित्रः 51)।

चित्रः 52, उमा–महेश्वर

चित्रः 53, आधुनिक इष्ट का मंदिर

चित्रः 54

चित्रः 55

गर्भगृह की आठवीं पाषाण प्रतिमा उमा–महेश्वर की है। मूर्ति में उमा–महेश्वर आलिंगन मुद्रा में प्रदर्शित हैं जिसमें दाहिनी तरफ महादेव की मूर्ति है जिसके पीछे प्रभामंडल बना हुआ है। महादेव का सिर जटा युक्त है तथा कान में बड़े–बड़े कर्ण कुण्डल तथा गले में सर्प प्रदर्शित है। मूर्ति में दो हाथ दिखाई पड़ते हैं जिसमें उनका दाहिना हाथ देवी उमा के कंधों पर है तथा बांया हाथ उनके वक्ष स्थल को स्पर्श करते हुए प्रदर्शित है। मूर्ति में देवी के केश खुले हुए हैं, उनके कानों में कर्ण कुण्डल हैं (चित्रः 52)।

इस मंदिर के पार्श्व में एक अन्य आधुनिक मंदिर है जिसकी छत गुंबदाकार है। इसके शिखर के ऊपर आमलक, कलश और ऊँ अक्षर युक्त चक्र स्थापित है। इसके गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है जो काले रंग का है। गर्भगृह के सामने एक सभामंडप बनाने का प्रयास किया गया है किंतु यह अभी अपूर्ण है (चित्रः 53)।

यहां पाषाण के चार शिवलिंग हैं जो बलुए पत्थर पर बने हैं। इनमें चारों शिवलिंग पर सामने की ओर मुख प्रदर्शित है जिनके सिर पर मुकुट विद्यमान है। शिवलिंग पर बने दो मुख के सिर पर लम्बे आकार का मुकुट है। वहीं दो के ऊपर मुकुट गोल आकार में है तथा कानों में कर्ण कुंडल पहने हुए हैं। शिवलिंग ऊपर से मोटा है किन्तु नीचे आते–आते पतला हो गया है। स्थानीय लोग इसकी पूजा अर्चना करते हैं तथा शिवलिंग के निचले भाग को मौली से बांधा हुआ है (चित्रः 54–57)।

चित्रः 56

चित्रः 57

चित्रः 58, मंदिर

चित्रः 59, शिवलिंग

यहां के एक अन्य आधुनिक मंदिर है जिसका रंग सफेद और नारंगी है। मंदिर नागर शैली का है। इसके पिरामिडाकार शिखर के ऊपर आमलक, कलश और ऊॅ अक्षर युक्त चक्र स्थापित है(चित्रः 58)। मंदिर के गर्भगृह के अन्दर शिवलिंग स्थापित है जो कि बलुऍ पत्थर पर बना है (चित्रः 59)।

यहां एक अन्य आधुनिक मंदिर है जोसफेद रंग से पुता है। यह नागर शैली में बना है। इसके पिरामिडाकार शिखर के ऊपर आमलक, कलश और ऊॅ अक्षर युक्त चक्र स्थापित है(चित्रः 60)। मंदिर के मुख्य द्वार के ऊपर तीन फूलों का सुन्दर अलंकरण हुआ है। यह शिव मंदिर है। मंदिर के गर्भगृह में एक नन्दी (चित्रः 61) तथा दो पाषाण शिवलिंग स्थापित हैं जिन्हें स्थानीय लोग शिव के रूप में पूजा अर्चना करते हैं (चित्रः 62)।

चित्रः 60, मंदिर

चित्रः 61, नन्दी

चित्रः 62,युगल शिवलिंग

सर्वेक्षण से स्पष्ट है कि देव मार्कण्डेय ताम्र–पाषाण कालीन एक प्राचीन बस्ती है जहां एन0बी0पी0 काल में अधिवास बना रहा। यहां मंदिर निर्माण की प्रक्रिया शुंग–कुषाण काल में प्रारम्भ हुई होनी चाहिए। कारण कि यहां से प्राप्त होने वाली अनेक सूर्य प्रतिमाओं को कुषाण कालीन आदर्श पर बनाया गया है। बुकनन ने यह उल्लेख किया है कि उन्हें यहां से एक अभिलेख प्राप्त हुआ था[11] किन्तु उसके विषय में अब किसी को कुछ ज्ञात नहीं है। स्थानीय लोग यह दावा करते हैं कि उन्हें उस अभिलेख की कुछ पंक्तियाँ याद हैं, जो इस प्रकार हैः ''श्रीमद्विक्रमसंवत्सरे निगीदते शून्ये युगे चंद्रिके, अर्धांगिनी फूलचन्द्र नाम्ना च गोभावती। जेष्ठे वै श्रावणो शशांक दिवसे शुक्ला तिथि पंचमी, साध्वी धर्मरता चकार जीर्णोद्धार च देवालया।''यदि इस पर विश्वास किया जाय तो विक्रम संवत् 120 यानी कि 63 ईस्वी में स्थानीय चेरो शासक फूलचन्द्र की पत्नी गोभावनी ने यहां किसी मंदिर का जीर्णोद्धार कराया था[12]। गुप्त राजवंश के शासक वैष्णव धर्मानुयायी थे। गुप्त काल में देवमार्कण्डेय की प्रसिद्धि एक वैष्णव केन्द्र के रूप में विस्तृत होती दिखाई देती है। वर्तमान में प्राप्त मूर्तियों में सूर्य प्रतिमाओं की अपेक्षा विष्णु की पाषाण प्रतिमाओं की संख्या अधिक है। अन्य हिन्दू देवी–देवताओं के मूर्तियों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। प्राप्त होने वाली खण्डित मूर्तियां किसी विध्वंस की ओर संकेत करती हैं किन्तु उसकी क्षतिपूर्ति चौदहवीं–पन्द्रहवीं शताब्दी में नई मूर्तियों को स्थापित कर की भी गई। आज भी देवमार्कण्डे रोहतास जनपद का एक सुप्रतिष्ठित हिन्दू धार्मिक केन्द्र है। यदि इसे विकसित किया जाय तो एक अच्छा पर्यटन स्थल बन सकता है।

प्रश्नगत सर्वेक्षण में प्रोफेसर राम तवक्या सिंह, डॉ0 संजय त्रिपाठी, डॉ0 देवजी मिश्र, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा एवं कुछ स्थानीय लोगों ने साथ रह कर सहयोग किया जिसके लिए हम उनके प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए अपना आभार प्रदर्शित करते हैं।

संदर्भः

1. जमुआर बी0 के0, द ऐंशिएण्ट टेम्पल्स ऑफ बिहार, 1985, पृ0 62
2. आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंण्डिया रिपोर्ट, जिल्द 16, पृ0 59
3. ओल्ढम सी0 ई0 ए0 डब्लू0, जर्नल ऑफ फ्रांसिस बुकनन केप्ट ड्यूरिंग द सर्वेऑफ द डिस्ट्रिक्ट ऑफ शाहाबाद इन 1812–13, पृ0 22–24
4. पाण्डे सम्मुख, आर्कियोलॉजी ऑफ रोहतास डिस्ट्रिक्ट, पृ0 112

5. पाटिल डी0 आर0, द एण्टीक्वेरियन रिमेन्स इन बिहार, 1963,पृष्ठ 110–113
6. मार्कण्डेय पुराण, अध्याय 106–108.
7. मत्स्य पुराण, अध्याय 261; भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, अध्याय 131; साम्बपुराण, अध्याय 31; विष्णुधर्मोत्तर पुराण, 3/67/2–17; डॉ0 गीताराय, शाक द्वीपीय मग संस्कृतिः एक ऐतिहासिक अनुशीलन, 1996, पृ0 105–121.
8. वृहत्संहिता, अध्याय 58, श्लोक 146–48
9. नागर शान्ती लाल, सूर्य एण्ड सन कल्ट इन इंडियन आर्ट, कल्चर, लिट्रेचर एण्ड थॉट, दिल्ली, 1995 पृष्ठ 162.
10. डेविड सिक, मिथरास एण्ड द मिथ्स ऑफ सन, ऑनलाइन पब्लिकेशन, 1 जनवरी 2004, एन वी एम ई एन इन्टरनेशनल रिब्यू फॉर द हिस्ट्री ऑफ रेलिजन।
11. ओल्ढम सी0 ई0 ए0 डब्लू0, जर्नल ऑफ फ्रांसिस बुकनन केप्ट ड्यूरिंग द सर्वेऑफ द डिस्ट्रिक्ट ऑफ शाहाबाद इन 1812–13, पृ0 23; ओमैले एल0एस0एस0, बिहार एण्ड उड़ीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, शाहाबाद, (जेम्स जे0 एफ0 डब्लू द्वारा संशोधित संस्करण), 2005, पृष्ठ 167.
12. तिवारी, श्याम सुन्दर, रोहतास का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, 2008, पृष्ठ 149.